Dr Raman Kumar Thakur

Assistant professor(Guest) Deptt. of Economics, D.B.College, Jaynagar.

Class:-B.A.part-2(Hons)paper-4.Date:-04-08-2020. Lecture n:-1

Topic:- कृषि का व्यवसायीकरण या वाणिज्यीकरण.

(Commercialization of Agriculture):- भारतीय कृषि के व्यवसायीकरण की प्रक्रिया सन 1850 के पश्चात ही शुरू हो गई थी तथा सन 1870 तक भारतीय कृषि का आंशिक व्यवसायीकरण हो चुका था 1880 के पश्चात और विशेषकर सन 1900 के पश्चात कुछ विशेष कारणों से भारतीय कृषि का अपेक्षाकृत अधिक सीमा तक व्यावसायिकरण होने लगा था। फलतः अब कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन एवं उपभोग का माध्यम नहीं रह गई थी बल्कि उसके उत्पादन का विदेशी व्यापार भी किया जाने लगा था इसके अतिरिक्त गैर- खाद्यान्न फसलो, कपास, पटसन, तिलहन आदि के उत्पादन में भी वृद्धि होने लगी थी।

* **कृषि के व्यवसायीकरण के कारण (Causes of Commercialization of Agriculture):- 1).औद्योगिक क्रांति(Industrial Revolution):- भारत में औद्योगिक क्रांति भी कृषि के व्यवसाय करण के कारण रहा है क्योंकि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना और विकास के साथ इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति भी हो रही थी और उस समय में औद्योगिक क्रांति के कारण ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल की विशेषत:कपास और खाद्यान्नों की, आवश्यकता हुई जिसकी पूर्ति के लिए उद्योगपतियों ने**

सरकार की सहायता से भारतीय कृषि मे रुचि लेना प्रारंभ किया फलतः कृषि के व्यवसायीकरण को प्रेरणा मिली ।

A 2) लगान का नकद भुगतान(Payment of Land Revenue in cash):- ब्रिटिश सरकार ने स्थायी बंदोबस्त बिल पारित कर नई मालगुजारी की नीति तय की जिसके अंतर्गत किसान की मालगुजारी नगद में तय होती थी।

3). ब्रिटिश सरकार की व्यापारिक नीति(Commercial policy of British Government):- ब्रिटिश सरकार भारत को इस प्रकार विकसित करना चाहती थी कि वह ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल की पूर्ति कर सके और वहां के उद्योगों करो की निर्मित वस्तुओं की खपत कर सकें। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार की वाणिज्य नीति भारत को कृषि वस्तुओ एवं कच्चे माल का निर्यातक और निर्मित वस्तुओं का आयातक बनाने की थी। ऐसी अवस्था में भारतीय कृषि के व्यवसायीकरण को प्रोत्साहन मिला।

4). विदेशी व्यापार में वृद्धि(increase in foreign trade):- परिवहन सुविधाओं के विस्तार और सरकार के वाणिज्य की नीति के कारण भारत का विदेशी व्यापार बहुत ही अधिक व्यापक हो गया था बढ़ते विदेशी व्यापार का प्रतिबिंब भारतीय कृषि पर पड़ा और कृषि के व्यवसायीकरण को प्रोत्साहन मिला।

5) कृषि बाजार का विस्तार(Expention of the Agricultural market):- परिवहन और संचार की परिवर्धित सुविधाओं के कारण भारतीय कृषि के

बाजार का स्वरूप परिवर्तित हो गया। पहले कृषि बाजार का स्वरूप स्थानीय था अब वह अंतरराष्ट्रीय हो गया और कृषक केवल ग्रामीण बाजार के लिए नहीं अपितु दुरस्त विदेशी बाजारों के लिए भी उत्पादन करने लगे।

6). नकदी फसल का ऊंचा मूल्य(High price of cash Crops) :- ब्रिटेन को उधोग चलाने के लिए भारत से कच्चा माल की आवश्यकता थी। अतः ब्रिटेन को निर्यात करने के लिए नकदी फसलो की मांग अधिक थी। इस प्रकार किसान को नगदी फसलों का मूल्य आधान फसलों की तुलना में अधिक मिलता था इससे वे नकदी फसलो का उत्पादन अधिक करने लगे ।

* कृषि के व्यवसायीकरण के प्रभाव(Effect of the Commercialization of Agriculture):-

1) कृषि की प्रकृति का परिवर्तन।

2) आत्मनिर्भरता का ह्रास।

3) गांव में विभिन्न वर्गों का ध्रुवीकरण।

4) जोतों का उप- विभाजन और उप-खंडन।

5)साहूकारी का महत्व।

6) खाद्यान्न उत्पादन में गिरावट।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कृषि की पुरातन व्यवस्था जीवन निर्वाह मुलक थी। किसान अपनी आवश्यकताओं के लिए उत्पादन करते

थे। नई व्यवस्था ने यह पुराना आधार बदल दिया। अब यह बाजार मुलक हो गयी है।